UGC NET JRF… Paper =2 Sanskrit

Filler Form

YouTube

UNIT=2

Class-11

By=NIDHU CHAUDHARY

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

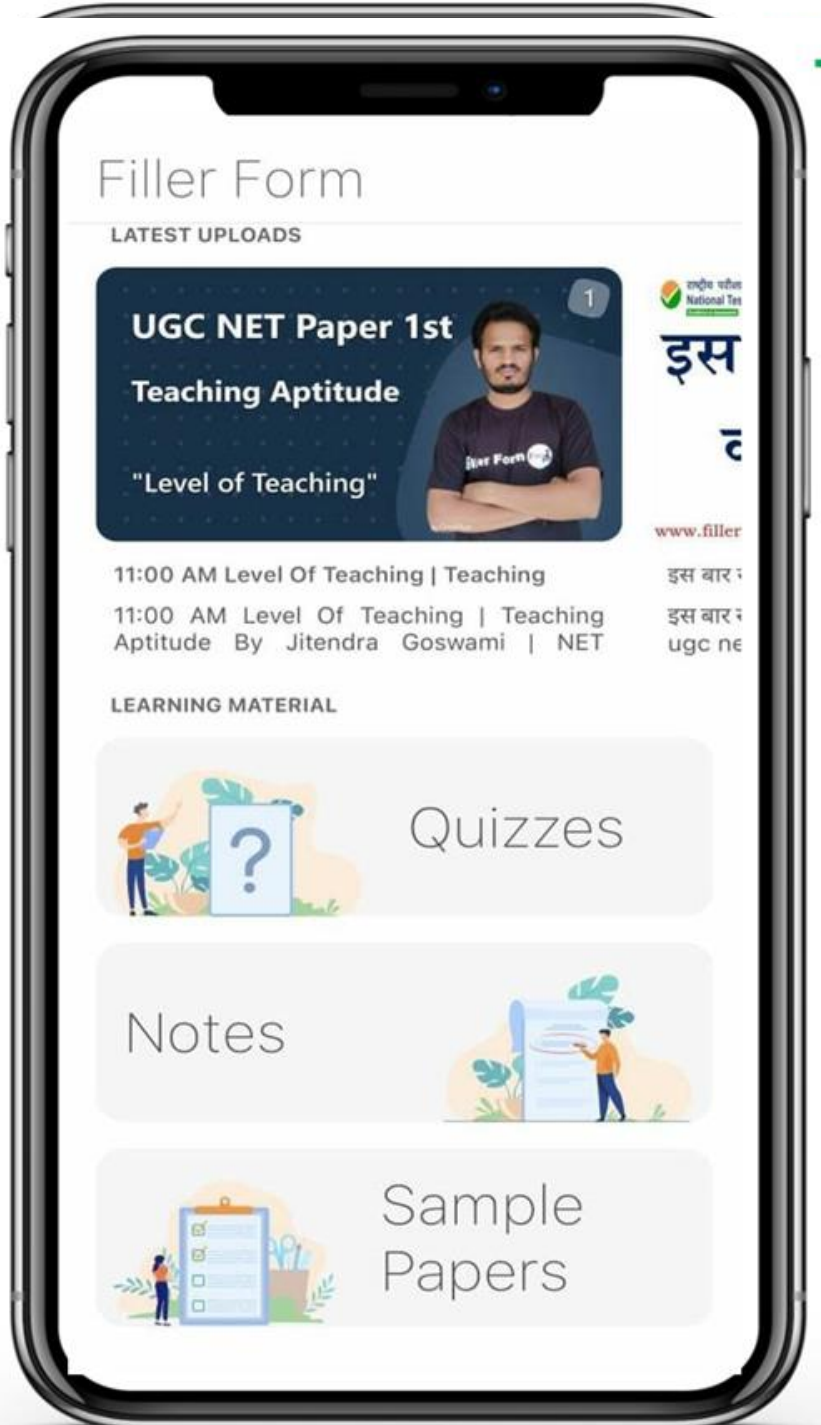

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

8209837844 www.ugc-net.com

Unit_2 वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- = ऋग्वेद : एक परिचय
- = ऋग्वेद - संहिता सूक्त
- = शुक्लयजुवेद -संहिता सूक्त
- = कृष्ण यजुर्वेद - एक परिचय
- = अथवॅवेद -संहिता सूक्त

= बाह्मण- साहित्य विधि एवं उनके प्रकार

= उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण,

= निरूक्त एवं वैदिक व्याख्या- पद्धति

8209837844

www.ugc-net.com

अथवॅवेद -संहिता सूक्त

अथर्ववेद (संस्कृत : अथर्ववेदः , अथर्ववेद : अथर्वस और वेद से , जिसका अर्थ है "ज्ञान") "अथर्वों का ज्ञान भंडार , रोजमर्रा की जिंदगी की प्रक्रियाएं" है।

पाठ चौथा वेद है , लेकिन हिंदू धर्म के वैदिक ग्रंथों में देर से जोड़ा गया है ।

8209837844

www.ugc-net.com

अथर्ववेद:

चार वेद

जानकारी

धर्म	हिन्दू धर्म
भाषा	वैदिक संस्कृत
अवधि	सी.ए. 1000-900 ईसा पूर्व [1]
अध्याय	20 *काशी*
वर्सेज	5,977 मंत्र [2]

8209837844 www.ugc-net.com

अथर्ववेद

परिचय : महत्त्व एवं उपयोगिता

वेद के अन्य विभागों की तरह 'अथर्ववेद' की भी अपनी कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जिनके आधार पर यह अतुलनीय है। सृष्टि के गूढ़ रहस्यों, दिव्य प्रार्थनाओं, यज्ञीय प्रयोगों, रोगोपचार, विवाह, प्रजनन, परिवार, समाज-व्यवस्था एवं आत्मरक्षा इत्यादि जीवन के सभी पक्षों का इसमें समावेश है। इसमें ज्ञान-विज्ञान की गूढ़ धाराओं के साथ व्यावहारिक विज्ञान (एप्लाइड साइंस) भी है।

जीवन को सुखमय तथा दु:ख-रहित बनाने के उद्देश्य से ऋषियों ने जिन यज्ञीय अनुष्ठानों का विधान बनाया है, उनके पूर्ण निष्पादन के निमित्त जिन चार ऋत्विजों की आवश्यकता बताई गई है, उनमें प्रमुख ऋत्विज् ब्रह्मा का प्रत्यक्ष सम्बन्ध 'अथर्ववेद' से ही है। **'ब्रह्मा'** का दायित्व यज्ञ-सम्बन्धी नाना विधियों का निरीक्षण तथा त्रुटियों का परिमार्जन करना है। 'गोपथ-ब्राह्मण' का कथन है कि तीनों वेदों के द्वारा यज्ञ के केवल एक पक्ष (वाक्) का संस्कार होता है। **'ब्रह्मा'** मन के द्वारा यज्ञ के दूसरे पक्ष का संस्कार करता है—

8209837844 www.ugc-net.com

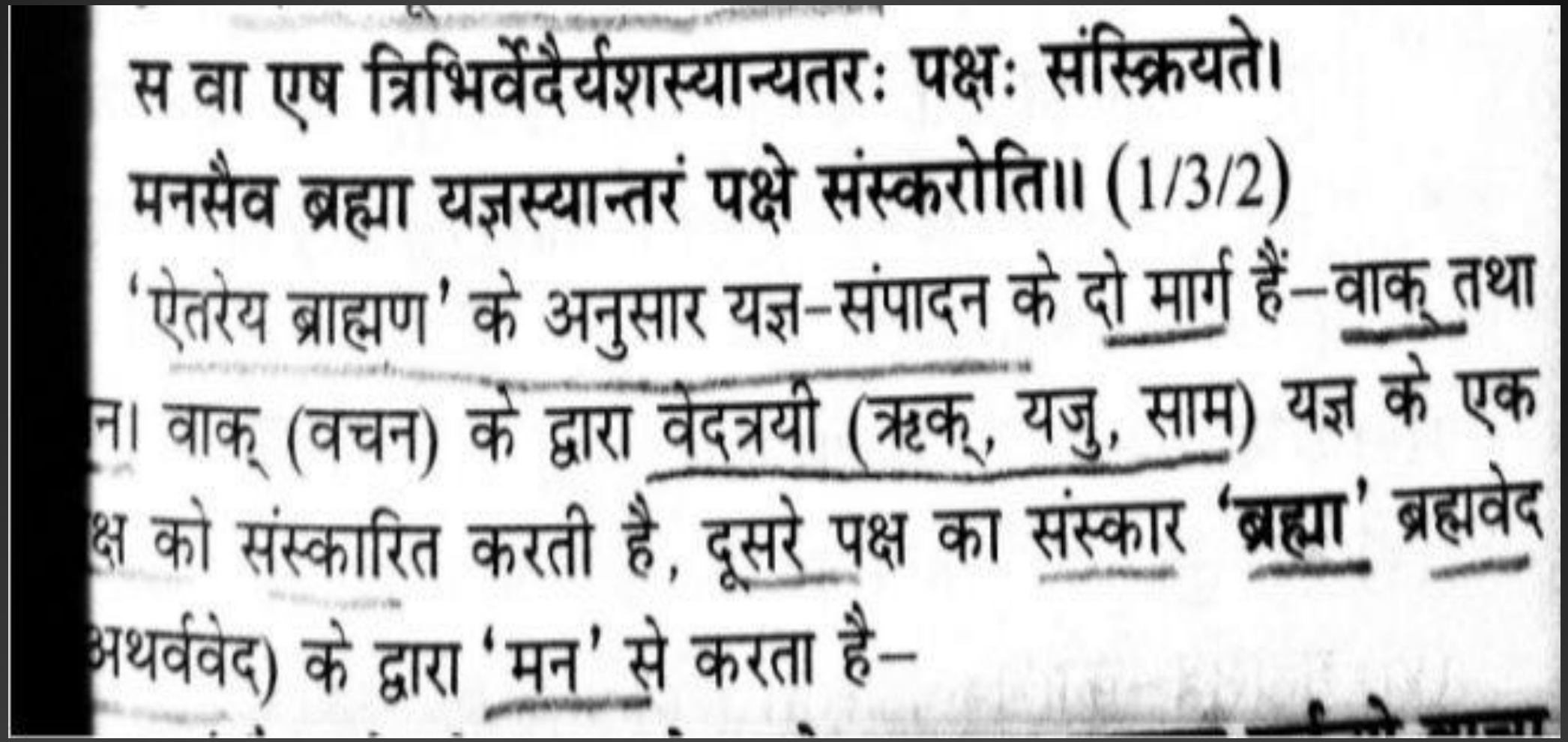

स वा एष त्रिभिर्वेदैर्यज्ञस्यान्यतरः पक्षः संस्क्रियते।
मनसैव ब्रह्मा यज्ञस्यान्तरं पक्षे संस्करोति॥ (1/3/2)

'ऐतरेय ब्राह्मण' के अनुसार यज्ञ-संपादन के दो मार्ग हैं—वाक् तथा
न। वाक् (वचन) के द्वारा वेदत्रयी (ऋक्, यजु, साम) यज्ञ के एक
क्ष को संस्कारित करती है, दूसरे पक्ष का संस्कार **'ब्रह्मा'** ब्रह्मवेद
अथर्ववेद) के द्वारा 'मन' से करता है—

8209837844 www.ugc-net.com

अयं वै यज्ञो योऽयं पवते तस्ये वाक् च मनश्च वर्तन्यो वाचा च हि मना च यज्ञो वर्तत्।

इयं वै वागदां मनस्तद्वाचा त्रय्या विधैयैक पक्षं संस्कूर्वन्ति, मनसैव ब्रह्मा संस्करोति॥ (5/33)

वस्तुत: 'अथर्ववेद' में शांति-पुष्टि तथा आभिचारिक—दोनों तरह के अनुष्ठान-प्रयोग वर्णित हैं। राजा के लिए इसका विशेष महत्त्व स्वीकार किया गया है। राजा के लिए शांतिक-पौष्टिक कर्म तथा तुला-पुरुषादि महादान की विशेष आवश्यकता पड़ती है, जो 'अथर्ववेद' का मुख्य प्रतिपाद्य है। 'मत्स्यपुराण' का कथन है कि पुरोहित को अथर्वमंत्र तथा ब्राह्मण में पारंगत होना चाहिए—**पुरोहितं तथा अथर्वमन्त्रब्राह्मणं पारगम्।** अथर्वपरिशिष्ट में लिखा है कि 'अथर्ववेद' का ज्ञाता शांतिकर्म का पारगामी (पुरोहित) जिस राष्ट्र में रहता है, वह राष्ट्र उपद्रवों से हीन होकर वृद्धि को प्राप्त करता है। इसलिए राजा को

8209837844

www.ugc-net.com

चाहिए कि वह अथर्ववेदविद् तथा जितेंद्रिय पुरोहित का दान-सम्मान, सत्कारपूर्वक नित्यप्रति पूजन-अर्चन करे।

'अथर्ववेद' के नाम

'निरुक्त' में **अथर्व** का निर्वचन इस प्रकार किया गया है--

अथर्वाणोऽथर्व (ण) वन्तस्थर्वतिश्चरति कर्मा। तन्प्रतिबेधः।

(12/21/8)

यहाँ 'थर्व्' धातु कुटिलता (थर्व् कौटिल्ये), गतिशीलता, हिंसा इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होती है। अतएव 'अथर्व' का अर्थ हुआ अकुटिलता तथा अहिंसावृत्ति से चित्त की स्थिरता प्राप्त करनेवाला। 'अथर्वन्' का एक अर्थ अग्नि को उद्बोधित करनेवाला 'पुरोहित' भी होता है।

वैदिक वाङ्मय में 'अथर्ववेद' के अनेक नाम हैं, यथा--अथर्ववेद, ब्रह्मवेद, अमृतवेद, आत्मवेद, अंगिरोवेद, अथर्वाङ्गिरस वेद, भृग्वांगिरसवेद इत्यादि।

'गोपथ-ब्राह्मण' तथा छान्दोग्योपनिषदादि ग्रंथों में 'अथर्ववेद' को 'ब्रह्मवेद' की संज्ञा प्रदान की गई है--

चत्वारो वा इमे वेदा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ब्रह्मवेदः।

(गो.बा.-2/16)

सैव ऋक् तत्साम तदुक्थं तद् यजुस्तवं ब्रह्म।

(छांदोग्यो.-1/7/5)

8209837844 www.ugc-net.com

सैव ऋक् तत्साम तदुक्थं तद् यजुस्तवं ब्रह्म।

(छांदोग्यो.-1/7/5)

'अथर्ववेद' की प्राचीन संज्ञा **'अथर्वांगिरस वेद'** भी है। इससे इसका सम्बन्ध 'अथर्व' और 'अंगिरा' दो ऋषिकुलों से संयुक्त प्रतीत होता है। वस्तुत: अंगिरावंशीय अथर्वा ऋषि के द्वारा प्रस्तुत रूप प्रदान किए जाने के कारण इस वेद को 'अथर्वांगिरस वेद' कहा जाता है। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि अथर्व-दृष्ट-मंत्र शांति और पुष्टि-कर्मयुक्त हैं और अंगिरस्-दृष्ट-मंत्र आभिचारिक (जादू-सम्बन्धी/अभिशाप-पूर्ण) हैं। प्रथमत: शांति-पौष्टिक मंत्र हैं, बाद में आभिचारिक मंत्रों का समावेश है। इसलिए अथर्वांगिरस (अंगिरस) संज्ञा सार्थक है।

8209837844 www.ugc-net.com

'अथर्ववेद' को '**भृग्वांगिरस वेद**' भी कहा जाता हैं।

'अथर्ववेद' के प्रचार-प्रसार का प्रमुख श्रेय 'भृगु' को प्राप्त है। 'भृगु' अंगिरा के शिष्य थे। अत: इसे भृग्वांगिरस वेद की संज्ञा प्राप्त हुई और सर्वश्रेष्ठता भी–**एतद्वै भूयिष्ठं ब्रह्म यद् भृग्वंगिरसः**। (गो. ब्रा.-1/3/4)

अथर्ववेद की उक्त संज्ञाओं के अतिरिक्त कुछ और भी संज्ञाएँ हैं, यथा–**छंदोवेद** (छंदांसि-अथर्व.-11/7/24), **महीवेद** (ऋचः साम यजुर्मही, अथर्व.-10/7/14), **क्षत्रवेद** (शत.ब्रा.-14/8/14/2-4) तथा **भैषज्य वेद** (**ऋचः सामानि भेषजा। यजूंषि होता ब्रूमः**। (अथर्व. -11/6/34)

8209837844

www.ugc-net.com

'अथर्ववेद' की संहिताएँ

अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र के दारिल भाष्य में 'अथर्ववेद' की तीन संहिताओं का उल्लेख पाया जाता है—(I) शौनकीय/ आर्षी-संहिता, (II) आचार्य-संहिता और (III) विधि-प्रयोग-संहिता।

(I) **आर्षी संहिता**—ऋषियों के द्वारा परंपरागत प्राप्त मंत्रों के संकलन को 'आर्षी संहिता' कहा जाता है। आजकल कांड, सूक्त और मंत्रों के विभाजनवाला जो 'अथर्ववेद' उपलब्ध है, वह शौनकीय संहिता, ऋषि संहिता या आर्षी संहिता ही है।

8209837844 www.ugc-net.com

(II) **आचार्य-संहिता**—उपनयन-संस्कार के बाद आचार्य अपने शिष्य को 'अथर्ववेद' का अध्ययन जिस रूप में कराता है, वह आचार्य संहिता कहलाती है।

(III) **विधि-प्रयोग-संहिता**—जब मंत्रों का प्रयोग किसी अनुष्ठेय कर्म के लिए किया जाता है तो एक ही मंत्र को कई पदों में विभक्त करके अनुष्ठेय मंत्र निर्माण कर लिया जाता है, तब ऐसे मंत्रों के संकलन को विधि-प्रयोग संहिता कहते हैं। अनुष्ठेय मंत्र **'विधि प्रयोग संहिता'** का प्रथम प्रकार है। द्वितीय प्रकार में मंत्रों में नए शब्द जोड़े जाते हैं। तृतीय प्रकार में उस सूक्त के प्रतिमंत्र के साथ किसी विशिष्ट मंत्र का आवर्त्तन किया जाता है। इस प्रकार सूक्त के मंत्रों की संख्या द्विगुणित हो जाती है। चतुर्थ प्रकार में किसी सूक्त में आए हुए मंत्रों के क्रम को परिवर्तित कर दिया जाता है। पंचम प्रकार में किसी मंत्र के अर्धभाग को ही संपूर्ण मंत्र मानकर प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्षत: शौनकीय/आर्षी-संहिता 'अथर्ववेद' की मूल संहिता है। आचार्य संहिता उसका संक्षिप्तीकरण रूप और विधि-प्रयोग-संहिता उसका विस्तृतीकरण रूप है।

8209837844

www.ugc-net.com

'अथर्ववेद' का शाखा-विस्तार

अन्य वेदों की तरह 'अथर्ववेद' की भी एकाधिक शाखाओं का उल्लेख मिलता है। सायणभाष्य के उपोद्घात, प्रपञ्च हृदय, चरण व्यूह (व्यासकृत) तथा महाभाष्य (पतंजलिकृत) इत्यादि ग्रंथों में 'अथर्ववेद' की शाखाओं का उल्लेख पाया जाता है। महर्षि पतंजलि के महाभाष्य में 'अथर्ववेद' की 'नौ' शाखाओं का उल्लेख मिलता है—**नवधाऽऽथर्वाणो वेदः**। (1/1/1) महर्षि कात्यायनकृत 'सर्वानुक्रमणी' नामक इस ग्रंथ में इस सम्बन्ध में दो मत उद्धृत किए गए हैं। प्रथम मत के अनुसार, 'अथर्ववेद' की पंद्रह शाखाएँ हैं। वेदों की शाखाओं का प्रामाणिक वर्णन प्रस्तुत करनेवाले ग्रंथ 'चरण व्यूह' में 'अथर्व संहिता' के 'नौ' भेद स्वीकार किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं—1. पैप्पल, 2. दान्त, 3. प्रदान्त, 4. स्नात, 5. सौत्र, 6. ब्रह्मदाबल, 7. शौनक, 8. देवदर्शत और 9. चरणविद्य। आचार्य सायण ने भी अपनी 'अथर्ववेद भाष्य-भूमिका' में इसकी नौ शाखाएँ ही स्वीकार की हैं, वे इस प्रकार हैं—1. पैप्पलाद, 2. तौद, 3. मौद, 4. शौनकीय, 5. जाजल, 6. जलद, 7. ब्रह्मवेद, 8. देवदर्शी और 9. चारणवैद्य।

वर्तमान में केवल दो शाखाओं—'पैप्पलाद और शौनकीय' से संबद्ध संहिता ही उपलब्ध होती है, उनमें भी एक में शौनकसंहिता ही आज की प्रचलित संहिता है, दूसरी पैप्पलादसंहिता यदा-कदा किसी पुस्तकालय में ही दर्शनार्थ उपलब्ध है।

8209837844 www.ugc-net.com

1. **पिप्पलाद संहिता**–'प्रपञ्चहृदय' नामक ग्रंथ के अनुसार, इस संहिता के आदि मुनि प्रसिद्ध अध्यात्मवेत्ता 'पिप्पलाद' हैं। बीस कांडात्मक इस संहिता की एक मात्र प्रति कश्मीर में उपलब्ध हुई, जो शारदा लिपि में थी, जिसे कश्मीर नरेश ने प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डॉ. राथ को 1885 में उपहार-स्वरूप प्रदान की थी। उसी की फोटो कॉपी तीन प्रति में सन् 1901 ई. में डॉ. राथ महोदय ने छपाई थी। महाभाष्य के अनुसार, इस संहिता का प्रथम मंत्र **'शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः'** है। छान्दोग्य-मंत्र-भाष्य में भी इसी मंत्र को पिप्पलादसंहिता का प्रथम मंत्र स्वीकार किया गया है–**'शन्नो देवी...' अथर्ववेदादिमन्त्रोऽयं पिप्पलाददृष्टः।'** आज-कल की प्रचलित संहिता (शौनक) में यह मंत्र प्रथम कांड के षष्ठ सूक्त के पहले मंत्र के रूप में उपलब्ध है।

8209837844 www.ugc-net.com

2. **शौनक संहिता**–'गोपथ ब्राह्मण' तथा आजकल की प्रचलित 'अथर्वसंहिता' इसी शौनक शाखा की है। इस संहिता में 20 कांड हैं, जबकि कई विद्वान् इसे 18 कांडात्मक ही मानते हैं। उनका कहना है कि उन्नीसवाँ और बीसवाँ कांड 'खिल-कांड' हैं, जो पीछे से 'अथर्ववेद' में सम्मिलित कर लिए गए, फिर भी 20 कांडीय संहिता को मान्यता दे दी गई है।

इसके सूक्तों के विषय में मत–वैभिन्य है। बृहत्सर्वानुक्रमणी के अनुसार, इसमें 759 सूक्त, वैदिक यंत्रालय अजमेर से प्रकाशित संहिता में 731 सूक्त हैं। स्वामी गंगेश्वरानंद जती-द्वारा प्रकाशित 'अथर्ववेद' में 736 सूक्त उपलब्ध हैं। इन सभी संहिताओं की विवेकसम्मत समीक्षा 759 सूक्त मानने के पक्ष में जाती है।

सारांशत: 'अथर्ववेद' में 20 कांड, 34 प्रपाठक, 111 अनुवाक, 731 सूक्त और 5,987 मंत्र हैं।

8209837844 www.ugc-net.com

राष्ट्रभिवर्धन - सूक्त

(अथर्ववेद १/२९)

ऋषि = वशिष्ठ

देवता = अभीवर्तमणि , ब्रह्मणस्पति

छंद = अनुष्टुप मंत्र =६

8209837844 www.ugc-net.com

काल सूक्त

(अथवॅवेद -१९/५३)

ऋषि = भृगु

देवता = काल

छंद = त्रिष्टुप, निचृत् , पुरस्ताद , बृहती ६-१० अनुष्टुप् ।

मंत्र = १०

8209837844 www.ugc-net.com

भूमि - सूक्त / पृथ्वी - सूक्त

(अथर्ववेद १२/१)

छंद = त्रिष्टुप, भुरित त्रिष्टुप, जगति

मंत्र = ६३

8209837844 www.ugc-net.com

FEEDBACK

💥 आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝 Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

THANK YOU